8EQQC2

पाठ 6

जो मैं नहीं बन सका

– डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी

एक किशोर मन में उम्मीदों की असीम उड़ान होती है। वह अपने परिवेश में जो कुछ होते हुए देखता है बिना किसी विशेष तर्क के उसकी और आकर्षित होता है, उसे अधिक जानना, समझना और सहेजना चाहता है, उन कार्यों या घटनाओं के अनुभव प्रक्रिया से गुज़रना चाहता है या कहें कि उसकी अनुभूति प्राप्त करना चाहता है। यह पाठ 'जो मैं बन नहीं सका' इन्हीं तरह की अनुभूतियों से गुज़रने की ललक और उससे बनती समझ को रखती हुई एक व्यंग्य रचना है। लेखक ने अपने किशोर जीवन की कई घटनाओं का उल्लेख किया है हास्य तो अवश्य पैदा होता है पर उन पेशों की विवशताओं या दायरों का संकेत करते हुए जिससे उन पेशों के प्रति अपने लगाव के टूटने का सत्य भी बयान करते चलता है।

मैं आज एक डॉक्टर हूँ तथा लेखक भी, परंतु बचपन में मैं न तो डॉक्टर बनना चाहता था, न ही लेखक। बचपन में मैं न जाने क्या–क्या बनना चाहता था। आज मैं आपको बचपन की उन अजीब तथा मज़ेदार इच्छाओं के विषय में बताऊँगा।

मुझे जहाँ तक याद आता है, सबसे पहले जिस व्यक्ति से मैं बुरी तरह प्रभावित हुआ था, वह एक पेंटर था। हमारे गाँव की एकमात्र फट्टा टॉकीज़ नई–नई खुली थी और लंबी जुल्फोंवाले गाँव के नौजवान गेटकीपर बन गए थे। मैं तब कक्षा पाँच का विद्यार्थी था। मैंने अपने पिद्दी जीवन की पहली टॉकीज़ देखी थी और मैं उसका दीवाना हो गया था। मैं स्कूल से भागकर टॉकीज़ पर घंटों खड़ा रहता और नई फिल्म के बोर्ड बनते देखता रहता। तब मैं गेटकीपर के अलावा जिस हस्ती पर कुर्बान था वह फिल्म का बोर्ड बनाने वाला पेंटर था। फिल्म हर दो–तीन दिन में बदल जाती थी, सो पेंटर लगभग प्रतिदिन वहाँ बैठा पोस्टर बनाता रहता था। मैं उसकी किस्मत पर रश्क करता और सोचता कि मैं भी बस जीवन भर बोर्ड बनाऊँगा। क्या मस्त जीवन है! बोर्ड बनाओ और दिन भर टॉकीज़ पर रहो। परंतु बाद में मैंने उसी पेंटर को टॉकीज़ के मैनेजर के सामने दस रुपए एडवांस के लिए गिड़गिड़ाते देखा, तो उस दिन से मेरा भ्रम उसके विषय में टूट गया। मैंने तय किया कि मैं पेंटर नहीं बनूँगा। तब तक यूँ भी मेरी नज़र गेटकीपरी के भव्य धंधे पर पड़ चुकी थी।

मुझे लगता कि ज़िंदगी तो बस गेटकीपर की है, शेष मनुष्य तो पशुओं–सा जीवन जी रहे हैं। गेटकीपर की भी क्या शान है! तीनों शो मुफ्त फिल्म देख रहे हैं। मुझे यह बात किसी ईश्वरीय वरदान की भाँति लगती थी कि कोई मनुष्य तीनों शो में रोज़ फिल्म देखे। मैंने तय कर

लिया कि मैं जीवन में गेटकीपर बनकर ही रहूँगा। इधर मेरी पढ़ाई चौपट हो रही थी, उधर मैं फटेहाल–सा बनकर स्थानीय लक्ष्मी टॉकीज़ के मैनेजर से मिल रहा था। उस बेचारे ने मुझे अनाथ समझकर, शामवाले शो के लिए गेटकीपर रख लिया। दूसरे ही दिन जिस आदमी का पहला टिकट मुझे फाड़ने का अवसर मिला, वे और कोई नहीं स्वयं मेरे पूज्य पिता जी थे। उन दिनों पिताओं के बीच, अपने बच्चों को पीटने का जबरदस्त रिवाज़ था। पिता जी ने मुझे मारा, मैनेजर को मारा, दो गेटकीपरों को मारा और मारते–मारते मुझे घर लाए। टॉकीज़ का मैनेजर मेरे पिता जी से क्षमा माँगता रहा कि उसे पता नहीं था कि यह सरकारी अस्पताल के डॉक्टर साहब का लड़का था।

इसी चक्कर में मैं छठी की छमाही परीक्षा में फेल हो गया, जिसके उपलक्ष्य में मेरी और पिटाई हुई। इस प्रकार गेटकीपरी का भूत मेरे सर से उतरा।

मैंने अब पढ़ाई में मन लगाया। धीरे–धीरे मुझे लगने लगा कि मुझे हेडमास्टर बनना चाहिए। दुनिया का सबसे रुआबदार धंधा यही लगने लगा मुझे। अधिक काम भी नहीं। बस, सुबह–सुबह प्रार्थना के समय मूँछ लगाकर बच्चों के सामने खड़े हो जाओ, प्रार्थना के बाद दस–बारह बच्चों को तबीयत से झापड़ रसीद करो और अपने कमरे में बैठ जाओ। बीच–बीच में कमरे से निकलकर पुनः इस–उस क्लास में घुसकर बच्चों पर आघात हमले करो और शाम की घण्टी बजते ही छाता उठाकर, रास्ते के बच्चों को मारते हुए घर चले जाओ। मैंने तय कर लिया कि ज़िन्दगी में हेडमास्टर ही बनना है। यही सोचकर मैं नकली मूँछों की तलाश में बाज़ार घूमने लगा और पिटाई की प्रैक्टिस अपने छोटे भाइयों पर करने लगा। परंतु इसी बीच एक बार ज़िला शिक्षा अधिकारी ने अपने दौरे पर हम लोगों के सामने ही हेडमास्टर साहब को ऐसा फटकारा कि मेरा सारा उत्साह भंग हो गया।

मैंने अब हेडमास्टर बनने की इच्छा त्यागी और स्कूल की घंटी बजानेवाला चपरासी बनने की ठानी। मैंने सोचा कि अब तक मैं बेकार ही भटकता रहा। अरे, जिंदगी तो इसकी है। जब चाहा घंटी बजाकर स्कूल की छुट्टी करा दी। बाकी टाइम बैठकर बीड़ी या सिगरेट पीते रहे। मुझे लगता कि इस धंधे में बीड़ी पीने से कोई नहीं रोकेगा, वरना तो एक बार मैं छिपकर पिता जी की सिगरेट पी रहा था, तो उन्होंने पकड़ लिया था और मारपीट पर उतर आए थे। तब मेरी समझ में नहीं आया था कि जो चीज़ पिता जी इतने शौक से पीते थे, उसे हमें मना क्यों करते थे। (वह तो बाद में पिता जी को दिल का दौरा पड़ा तब सिगरेट की हानियाँ समझ में आईं।) खैर, तो मैं इतने लाभों को देखते हुए घंटी

बजानेवाला चपरासी होना चाहता था। परंतु एक दिन मैंने देखा कि घंटीवाले को नौकरी से निकाल दिया गया क्योंकि उसकी नौकरी बीस वर्ष के बाद भी कच्ची थी और उसकी जगह एक नया आदमी आ गया जो हेडमास्टर साहब के घर मुफ्त में पानी भरा करता था। बड़ा रोया वह, पर किसी ने न सुनी उसकी। मेरा एक और सपना टूटा।

मुझे तब लगने लगा कि यदि मैं पहलवान होता, तो ऐसे अन्याय करनेवालों की चटनी बना देता। परंतु मैं बहुत ही दुबला–पतला था उन दिनों। हम पिकनिक पर जाते तो मैं बनियान या कमीज़ पहनकर ही नदी में नहाने के लिए उतर जाता क्योंकि मेरी सींकिया काठी को देखकर मित्र हँसते थे। फिर भी मैंने शरीर बनाने की तरफ कोई ध्यान न दिया होता यदि तभी मेरे दादा जी गाँव से न आए होते। वे अँग्रेजों के समय के अड़ियल, रिटायर्ड पुलिस ऑफिसर थे। उनके कहने से मैंने सुबह–सुबह चने खाकर दौड़ने की ठानी। अफवाह यह थी कि ऐसा करने से भी व्यक्तित्व पहलवान हो जाता है। मैं दो दिन तो ठीक–ठाक दौड़ लिया। तीसरे दिन एक मरियल–सा, परंतु फुर्तीला कुत्ता मेरे पीछे दौड़ने लगा। उसने मुझसे प्रेरणा ली या उसके दादा जी भी पुलिस में जासूसी कुत्ता रहे थे, कह नहीं सकता। मैं कुत्ते से बचने के लिए उस दिन बहुत दौड़ा और शायद और दौड़ता रहता यदि सड़क से सटा हुआ वह गड्ढा न होता। कुत्ता कुछ मजाकिया भी था। वह गड्ढे के किनारे तक आकर मुँह बनाकर भौं–भौं करके हँसता रहा और वापस चला गया।

मैं राणा साँगा की तरह यहाँ–वहाँ से घायल हो गया। लँगड़ाते हुए घर लौटने में मैंने तय किया कि पहलवानी में शरीर की तोड़फोड़ के कई अवसर रहते हैं। मैं तोड़फोड़ के खिलाफ था। मैंने पहलवान बनने का इरादा त्याग दिया।

इसी बीच गाँव में मेला लगा और उसमें एक जादूगर के खेल के बड़े चर्चे होने लगे। मैंने पहलवानी की याद में घावों पर मलहम का लेप लगाया और जादूगर का खेल देखने तंबू में घुस गया। वाह, क्या खेल था! मैंने तड़ाक से तय कर डाला कि मुझे जीवन में जादूगर ही बनना है।

बढ़िया चमकीली शेरवानी पहनकर, रंगीन छींटदार साफा लगाए वह जादूगर जादू की छड़ी पानी के गिलास पर घुमाकर चुर्रेट बोलता और पानी की चाय बन जाती। उसने चुर्रेट बोल–बोलकर कागज के नोट बनाए, लड़के को बकरा बनाया, लड़की को हवा में उड़ाया, खाली हाथ में हवा से लड्डू पैदा किया और खाली डिब्बे में से कबूतर निकाले। मैं अभिभूत हो गया। यह हुई न बात। मैं उस दिन चुर्रेट बोलता हुआ घर वापस आया। स्कूल में हेडमास्टर साहब का कमरा खाली पाकर मैंने उनकी मेज़ से चमकीली काली छड़ी उठा ली, जिसकी मार द्वारा वे बिना चुर्रेट बोले ही हम लोगों को मुर्गा बनाया करते थे। मैं छड़ी लेकर सुबह–सुबह जादूगर के तंबू पर जा पहुँचा। सोचा था कि उनसे प्रार्थना करूँगा कि मुझे भी जादू सिखा दें। जादू सीखकर मैं हेडमास्टर साहब को बकरा बनाना चाहता था। मैंने तंबू में झाँककर देखा। जादूगर अपने लड़के को डाँट रहा था कि पैसे की इस कदर तंगी है और तू लड्डू खरीदकर पैसे फूँक आया। मैले–कुचैले कपड़ों में टूटी खाट पर पड़े उस जादूगर को रुपयों के लिए रोते देखकर मैं दंग रह गया। जो शख्स कागज़ से रुपए तथा हवा से मिठाई बना लेता हो, उसकी यह दुर्दशा! मुझे वास्तविकता के इस कठोर संसार ने गहरा धक्का पहुँचाया और मेरा यह सपना भी टूटा।

इसके बाद जैसे–तैसे मैं बड़ा हुआ, तो मैंने जीवन को बहुत पास से देखा। इसके असर से मैंने कविताएँ तथा कहानियाँ लिखनी शुरू कर दीं। मैंने तय किया कि मैं लेखक बनूँगा। परन्तु आज भी जब मुझे याद आता है कि मैं बचपन में इन सबके अलावा बस ड्राइवर, हलवाई, दर्ज़ी, सड़क कूटनेवाले इंजिन का इंचार्ज, थानेदार, नौटंकी का डांसर, सर्कस का जोकर, आइसक्रीम बेचनेवाला आदि–आदि सब कुछ एक साथ बनना चाहता था तो बड़ी याद आती है अपनी किशोर उम्र की। क्या दिन थे वे भी।

शब्दार्थः– **पिद्दी**–छोटा तुच्छ, **रश्क**–किसी दूसरे को अच्छी दशा में देखकर होनेवाली जलन या कुढ़न, डाह, **कुर्बान**–बलि, निछावर, **फटेहाल**–विपन्न, **चिथड़ा**–चिथड़ा, **रूआबदार**–रौबीला, **अड़ियल**–हठी, रुकनेवाला, **तंबू**–कपड़े, टाट, कैनवास, आदि का बना हुआ वह बड़ा घर जो खंभों और खूँटों पर तना रहता है और जिसे एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान तक आसानी से ले जाया जा सकता है, **अभिभूत**–गहरे रूप में प्रभावित, वशीभूत।

अभ्यास

पाठ से

1. 'जो मैं नहीं बन सका' शीर्षक पाठ में लेखक की इच्छा क्या–क्या बनने की थी ?
2. पेंटर को 10 रुपए एडवांस के लिए गिड़गिड़ाते हुए देख कर लेखक के बालमन में क्या भाव उत्पन्न हुए?

3. सिनेमाघर का गेटकीपर बनने को लेकर लेखक के मन में किस प्रकार के भाव थे और क्या परिणाम हुआ ?
4. लेखक कक्षा 6वीं की अर्द्ध वार्षिक परीक्षा में फेल हो गया। उसके फेल होने के क्या कारण आपको लगते हैं ?
5. लेखक सबसे पहले किससे प्रभावित हुआ ?
6. पेंटर को देखकर लेखक के मन में किस तरह का भाव उत्पन्न हुआ ?
7. घंटी बजानेवाले को नौकरी से क्यों निकाल दिया गया ?
8. लेखक के जादूगर बनने का सपना कैसे टूट गया ?
9. प्रस्तुत पाठ में वर्णित जादूगर के दो करतब लिखिए।
10. निम्नलिखित बातें किस पद के लिए कही गई हैं–
    क. जो शख्स कागज से रुपये तथा हवा से मिठाई बना लेता हो, उसकी यह दुर्दशा।
    ख. मैं राणा साँगा की तरह यहाँ–वहाँ से घायल हो गया।
    ग. इस धंधे में बीड़ी पीने से कोई नहीं रोकेगा।
    घ. जिस आदमी का पहला टिकट मुझे फाड़ने का अवसर मिला, वे और कोई नहीं मेरे पूज्य पिता जी थे।

पाठ से आगे

8EZLDP

1. पाठ में एक स्थान पर लेखक कहते हैं कि मास्टर जी बिना चुररेट बोले ही हम लोगों को मुर्गा बनाया करते थे। आपको भी कभी शरारत करने पर सजा मिली होगी। साथियों से चर्चा कर अपने–अपने अनुभवों को लिखिए ?
2. जादू बच्चों को बहुत आकर्षित करता है और आपने कभी देखा भी होगा। जादू और जादूगर के बारे में आप अपनी समझ अनुभवों और अभिभावकों से बातचीत कर लिखिए।
3. धूम्रपान स्वास्थ्य के लिए सदैव हानिकारक है कैसे ? इसके दुष्प्रभावों के बारे में कक्षा में चर्चा कर एक विस्तृत आलेख तैयार कीजिए,।
4. छमाही परीक्षा में लेखक फेल होता है और आगे चलकर डॉक्टर बनता है। आप फेल होने को कैसे समझते हैं? क्या आपको लगता है कि किसी कक्षा में फेल हुए विद्यार्थी अपने जीवन में सफल नहीं हो सकते? इस विषय पर कक्षा में वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित कर इस विषय के पक्ष और प्रतिपक्ष के विचारों को लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
5. आप बस ड्राइवर, हलवाई, दर्जी, थानेदार, सर्कस का जोकर, आइसक्रीम बेचनेवाला और शिक्षक में से क्या बनना चाहेंगे? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

भाषा से

1. पाठ में विभक्ति युक्त शब्द व्यवस्थित रूप में लिखे गए हैं, जैसे – राम ने ,श्याम को, किताबों में, उसने, मुझमें, हममें से, उसके द्वारा आदि ।
2. यदि विभक्ति चिह्न संज्ञा शब्द के साथ आते हैं तो उन्हें संज्ञा शब्द से अलग लिखते हैं, जैसे – लेखक ने, व्यक्ति से, मैनेजर से, गेटकीपर का।
   - सर्वनाम शब्दों के साथ विभक्ति चिह्न को मिलाकर लिखा जाता है, जैसे – उसने, मुझमें, मैंने, आपने।
   - यदि सर्वनाम शब्दों के बाद दो विभक्ति चिह्न आते हैं तो पहला मिलाकर और दूसरा अलग कर प्रयुक्त होता है जैसे मेरे द्वारा, हममें से, आपमें से, उसके लिए आदि। पाठ में आए उपर्युक्त विभक्ति चिह्नों के आधार पर तीनों प्रकार के वाक्य प्रयोग को छाँटकर लिखिए।
3. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –
   (अ) जिन्दगी **बस** उस पेंटर की है।
   (ब) जिन्दगी तो **बस** गेटकीपर की ही है।
   (स) मेरा यह **भी** सपना टूट गया।

   8RDUU9

   उपर्युक्त उदाहरण के रेखांकित शब्द अव्यय कहे जाते हैं। ये शब्द अपनी बात पर जोर देने के लिए किए जाते हैं। ऐसे शब्द जिनमें लिंग, वचन, कारक आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहा जाता है। ये शब्द सदैव अपरिवर्तित रहते हैं। पाठ में प्रयुक्त ऐसे अव्यय युक्त वाक्यों को पहचान कर लिखिए।
4. डाक्टरों, पहलवानों, बच्चे, घंटे, बेटे, लड़कों, लड़कियाँ, जातियाँ, रास्तों आदि बहुवचन शब्द हैं। **अर्थात शब्द के जिस रूप से एक से अधिक पदार्थों या व्यक्तियों का बोध होता है वहाँ बहुवचन होता है।** प्रस्तुत पाठ में से ऐसे शब्दों को चुनकर लिखिए जिनका प्रयोग बहुवचन में हुआ है और इसके नियम पर शिक्षक से बात कीजिए तथा निम्नलिखित शब्दों को बहुवचन में बदलिए –
   व्यक्ति, मैं, गाँव, नौजवान, मेरा, धंधा।
5. निम्नलिखित मुहावरों का पाठ में प्रयोग हुआ है–
   चौपट होना, चटनी बनाना, सींकिया काठी, घावों पर मलहम लेप करना, पैसा फेंकना, झापड़ रसीद करना, सपना टूटना (मुहावरे भाषा को सुदृढ़, गतिशील और रुचिकर बनाते हैं। मोटे तौर पर हम कह सकते हैं कि जिस सुगठित शब्द–समूह से लक्षणाजन्य और कभी–कभी व्यंजनाजन्य कुछ विशिष्ट अर्थ निकलते हैं, उसे मुहावरा कहते हैं। कई बार यह व्यंग्यात्मक भी होते हैं।) पाठ में प्रयुक्त अन्य मुहावरो को ढूँढ़कर लिखिए और स्वयं से नए वाक्य निर्माण कर उनका प्रयोग कीजिए।

6. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए शब्दों से उचित शब्द छाँटकर कीजिए–

   क. मेरे गाँव में ———— लगा है। (मेला, मैला)

   ख. जादूगर ———— स्वभाव का व्यक्ति था। (शांति, शांत)

   ग. मोहन का अपने पड़ोसी के साथ ———— है। (बेर, बैर)

   घ. हर व्यक्ति ———— में जी रहा है। (चिता, चिंता)

   ङ. आशा के ———— आ गए हैं। (पिता जी, माता जी)

7. नीचे दिए गए संज्ञा शब्दों में से जातिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ छाँटकर अलग–अलग लिखिए।

   पहलवान–पहलवानी, जासूस–जासूसी, नौकर–नौकरी, जादूगर–जादूगरी, पढ़ना–पढ़ाई, उत्साह–उत्साही, व्यक्ति–व्यक्तित्व।

8. इस पाठ में एक वाक्य है– "मैं कुत्ते से बचने के लिए उस दिन बहुत दौड़ा **और** शायद **और** दौड़ता रहता यदि रास्ते से सटा हुआ वह गड्ढा न होता।" इस वाक्य में 'और' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है। इनके अर्थ अलग–अलग हैं। दोनों के अर्थ लिखिए और अलग–अलग अर्थों में इनका प्रयोग कीजिए।

योग्यता विस्तार

8RMQVH

1. पाठ में बहुत सारे पेशे या वृति का वर्णन किया गया है। आपके मन में भी कुछ न कुछ बनने के विचार आते होंगे। आप क्या बनना चाहते हैं और क्यों ? अपने विचार लिखकर कक्षा में सुनाइए।

2. व्यंग्य विधा क्या होती है? वह साहित्य की अन्य विद्याओं से कैसे भिन्न और मजेदार होती है? शिक्षक व सहपाठियों से इस विषय पर बातचीत कर लिखिए और पुस्तकालय से व्यंग्य रचनाओं को खोज कर पढ़िए तथा कक्षा में सुनाइए।

3. लेखक के पिता और हेडमास्टर साहब के व्यवहार में क्या समानता आपको देखने को मिलती है। आप अपने हेडमास्टर से क्या अपेक्षा रखते हैं? साथियों से बातचीत कर लिख कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

4. यदि आपको किसी विद्यालय का हेडमास्टर बना दिया जाए, तो आप विद्यालय में क्या–क्या सुधार करेंगे? इस बारे में संक्षेप में अपने विचार लिखिए।